मन का बनना हम किसे कहते है?

लोग कई बार कहते है की मेने केरल जाने के लिए मन बनाया,,,असल में कई बार हम जो भाषा उसे करते है वो लिटरली रीऐलिटी बयान करती है,,जब कोई कहता है की उसने कही जाने के लिए मन बनाया तो उसका मन का बनना होता है,,,मन बनता है विचारों से और विचार आते है भविष्य और भुतकाल से जब मन भुतकाल और भविष्य में जाता है तब विचार आते है,,

कई बार हम विचार करते है और कई बार विचार आते तो जब कोई विचार करता है तो इसका मन का एक मिकेनिसम बनता है, तो जब भी उनकोंशस होता है तो मन में विचार आते है, इसलिए जब भी लोगों को मन में विचार आते है तो दूसरी कही जगह पे मन लगाने की कोशिश करते है,

और जब विचार आते है तब जो विचार को पकड़ कर आप जो भी करते है उन्हें आप ख़ुद समजते हो, आप कहते है में केरल गया,,,इसलिए आप केरल जाने से जुड़े सुख दुःख से जुड़ गए, इसलिए हम कहते है की मन यह वहा ले जाता है,

तो जब आप कहते है की मन बनाया तो को पता नहीं है की आपने मन ही बनाया,,आप ऐसा कहते है क्योंकि कही शब्द कही गहराय से आ रहे है जो सत्य बयान करते है,,,यह एक संकेत है की आप मन नहीं हो,,,,आप विचार नहीं हो,,विचार के साक्षी मात्र हो,,

अध्यात्म की चरम सीमा है साक्षी हो जाना,,,और अध्यात्म शुरुआत होतीं है संकल्प से,,,इसलिए अध्यात्म की तरफ़ जाने के लिए संकल्प ले,

Aasthit